Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय ज्ञान परम्परा और रहीम : एक अध्ययन

डॉ. राजाराम परते *

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) शासकीय महाविद्यालय, बिजावर, जिला-छतरपुर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध और विविधतापूर्ण परंपरा है, जिसमें धार्मिक , दार्शनिक, नैतिक और व्यावहारिक ज्ञान का अद्धितीय संगम देखने को मिलता है। रहीम मुगलकाल के प्रमुख कवि, दार्शनिक और दरबारी कवि थे, जिन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों और तत्वों को समाहित किया। भारतीय ज्ञान परम्परा वेदों, उपनिषदों, महाकाव्यों (यथा-रामायण, महाभारत) स्मृतियों, पुराणों और लोक साहित्य के माध्यम से विकसित हुई है, इस परम्परा में धर्म, कर्म, सत्य, अहिंसा, शील, सहिष्णुता और लोकहित जैसे मूलभूत तत्व हैं। यह शोधपत्र भारतीय ज्ञान पंरपरा की प्रमुख विशेषताओं का परिचय कराता है, और रहीम के साहित्य में इन तत्वों की उपस्थिति का विश्लेषण करता है।

शब्द कुंजी – अहिंसा, सहिष्णुता, सनातन, आध्यात्मिकता, बसुधैव कुटुम्बकम्, दिव्यता, आत्मनियंत्रण, उद्घोष आदि।

प्रस्तावना – भारतीय ज्ञान परंपरा की नींव प्राचीन ग्रंथों जैसे वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत पर आधारित है। यह परंपरा तर्क, अनुभव और आध्यात्मिकता का संगम है और सनातन धर्म के मूल सिद्धांतों जैसे धर्म, कर्म, सत्य, अहिंसा, शील, लोकहित आदि को आत्मसात करती है। जैसे- धर्म का तात्पर्य समाज में उचित आचरण एवं कर्तव्य पालन से है। साथ ही सत्य-निष्ठा और दूसरों के साथ सहिष्णुता पर भी जोर दिया गया है। आकर्षक तथ्य यह है कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा से वैश्विक समरसता और सभी के प्रति करूणा का संदेश मिलता है। यही कारण है कि भारतीय दर्शन में लक्ष्य केवल आत्ममोक्ष ही नहीं बल्कि समाज कल्याण और परम्परा सहयोग भी माना गया है। रहीम (1556-1627) अकबर के नवरत्नों में से एक संस्कृत, फारसी और हिन्दी में दक्ष कवि थे। रहीम का असली नाम नवाब अब्दुर रहीम खान-ए-खाना था। धर्म की दृष्टि से मुसलमान होने के बावजूद रहीम ने हिन्दु देवी, देवताओं, तीज-त्यौहारों का उल्लेख पूरी निष्ठा के साथ करते है। रहीम के बारे में उत्कृष्ट कथन है कि वे धर्म से मुसलमान और संस्कृति से शुद्ध भारतीय थे। अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने भारतीय जीवन मूल्यों को आत्मसात किया है। हिन्दी, ब्रज दोहों के माध्यम से कवि ने अपने व्यक्तित्व में भारत की लोक परंपरा, संस्कृति, भक्ति रस और दार्शनिक चिंतन को सम्मिलित किया है। उनकी रचनाएं सरल भाषा में गहरी सीख प्रदान करती हैं जो समकालीन जनजीवन से जुड़ी हुई है।

भारतीय ज्ञान परंपरा

धर्म और कर्म- भारतीय परंपरा में धर्म (कर्तव्य, नैतिकता) और कर्म (क्रियाओं के फल) को जीवन के मार्गदर्शक सिद्धांत स्वीकार किया गया है। धर्म का अर्थ है अपने सामाजिक जीवन में कर्तव्यों का पालन करना और सत्य-निष्ठा और करूणामय व्यवहार करना। कर्म सिद्धांत हमें सिखाता है कि हर क्रिया का फल मिलता है इसलिए कार्य में निष्ठा, स्वार्थरहित भावना और उत्तरदायित्व अपेक्षित है। इस दृष्टि से जीवन का लक्ष्य समाज हितैषी, नीतिपूर्ण कर्म करना है।

सत्य, अहिंसा और संयम- सत्य का अर्थ है ईमानदारी और अहिंसा का अर्थ हिंसा न करना जैसे मूल्य भी भारतीय दर्शन परम्परा के मूलभूत सिद्धांत है।

ज्ञान योग- महाभारत में संतोष को सर्वोच्च दिव्यता माना है। शान्ति पर्व में कहा गया है - संतोष सर्वाधिक सुख है इससे बड़ा कोई सुख नहीं है।

संयमित जीवन, आत्मनियंत्रण और साधुता की भारतीय ज्ञान परंपरा में महती प्रतिष्ठा है। साधु और ऋषि-संतो के उपदेश इसके उदाहरण है। जिनमें आत्मज्ञान और आत्मनियंत्रण पर बल दिया गया है।

लोकहित और सामाजिक उत्तरदायित्व – भारतीय परम्परा में लोककल्याण को प्राण तत्व माना है। मानविकी जीवन में व्यक्ति को न केवल अपना बल्कि समाज और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व निर्वहन की शिक्षा दी गई है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसी अवधारणा समस्त भूमण्डल में निवासरत मानव जीवन के प्रति पारिवारिक भाव की अभिव्यक्ति का उद्घोष करता है। जिसमें सहिष्णुता और आपसी व्यवहार को बढ़ावा मिलता है।

प्रकृति और मानव जीवन- भारतीय जीवन दर्शन में प्रकृति को पवित्र एवं पूज्य माना गया है और मनुष्य और प्रकृति के बीच संतुलन पर जोर दिया गया है। मनुष्य एवं प्रकृति के मध्य सामंजस्यपूर्ण वृत्ति ही पर्यावरण की रक्षा है। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को पुण्य योग से जोड़ा गया है। योग, आयुर्वेद तथा ध्यान जैसे प्राचीन विज्ञान इस समन्वय भाव की पुष्टि करते हैं।

सामाजिक समरसता एवं सहिष्णुता- हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, बौद्ध आदि विविध धार्मिक समुदायों के मध्य सहिष्णुता भारतीय ज्ञान परंपरा की पहचान है। यहां परस्पर भेद-भाव नहीं बल्कि समता और भाईचारे का संदेश दिया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल सिद्धांत 'वसुधैव कुटुम्वकम्' जिससे सभी को आपस में सहानुभूति, सहयोग और शांतिपूर्वक सह-अस्तित्व की प्रेरणा मिलती है।

रहीम के काव्य की विशेषताएं – रहीम के काव्य में भारतीय लोकजीवन

और वैचारिक गहराई दोनों का समन्वय दिखाई देता हैं रहीम ने अपने दोहों में सरल, प्रभावशाली भाषा का प्रयोग किया है। और जन अनुभवों को काव्य का विषय बनाया। उनके गीतों में नीति और विवेक की बातें प्रमुख हैं – जैसे सामाजिक व्यवहार, परोपकार, प्रेम और भक्ति आदि।

उदाहरण:–

'रहिमन वे नर मर चुके, जे कहूँ कछु मांगन जाये।
उनते पहिले वे मुए जिनके मुख निकसत नाहि।।'

उदाहरण:–

'कदली, सीप, भुजंग मुख स्वाति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसो ही फल दीन।।'

आत्म जीवन अनुभव:– रहीम के दोहे प्राय: सामान्य जन की दिनचर्या, अनुभव और भावनाओं से प्रेरित हैं। उन्होंने अपने दोहों में मानवता, क्षमा, मधुरता और सामाजिक मेलजोल की बातें कही हैं। उनकी कहानियाँ जीवन के छोटे–छोटे दृश्यों से जुड़ी होती हैं। जिस कारण पाठक तुरंत संपर्क स्थापित कर लेता है–

उदाहरण:–

'जे रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापै नहि, लिपटे रहत भुजंग।।'

'रहिमन विपदा हूं भली, जे थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जान परत सब कोय।।'

नीति–नियम और भक्ति रस:– रहीम ने अपने दोहों में नीति (नैतिकता), प्रेम, भक्ति और आचरण से संबंधित उपदेश दिए हैं। इन दोहों में कबीर–परम्परा की भांति सरलता से गहन सत्य उद्घाटित होते हैं।

उदाहरण:–

'रहीमन देखे बडेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहां काम आवै सुई, कहां करे तलवारि।।'

इस दोहें के माध्यम से उन्होंने सभी जीवों के प्रति सम्मान की बात कही हैं, और प्रेम भक्ति के भाव वाले दोहें से मानव ईश्वर प्रेम की परम्परा का बखान किया है। उनकी रचनाएं समाज में सामूहिक सद्भाव और परमात्मा के प्रति श्रद्धा का संदेश देती हैं।

भाषा और प्रभाव– रहीम ने हिंदी और ब्रज भाषा में सहज, सारगर्भित शब्दों का प्रयोग किया हैं। उनकी रचनाएं प्राचीन संस्कृत साहित्य की प्रमुख रचानाओं से प्रेरित रही है और हिन्दुस्तानी भावों को हिंदू–अरबी तत्वों के साथ जोड़कर पाठकों से सहजता के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेती हैं।

उदाहरण:–

'रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गए न उबरै, मोती, मानुष, चून।।'

रहीम ने ब्रज, अवधी और खड़ी बोली में लिखा है, जिससे जनता उनके दोहों को सहजता से समझकर आत्मसात् करती रही है।

सांस्कृतिक एकता:– रहीम, मुस्लिम पृष्ठभूमि के होते हुए भी भारतीय सांस्कृतिक परम्परा के मूल्यों को गहराई से आत्मसात करते है। उन्होंने राम और कृष्ण दोनों के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की है, और रामायण, महाभारत आदि पौराणिक कथाओं का सम्मान किया है। अकबर के दरबार में उन्हें रामायण के फारसी अनुवाद की प्रति रखने की अनुमति दी गयी थी जिसे उन्होंने ' भारत का मानवीय ग्रंथ' बताकर महत्व दिया। इस प्रकार रहीम के काव्य में हिंदु भक्ति परम्परा के रस और इस्लामी आदर्शों का सम्मिश्रण दृष्टिगोचर होता हैं। उनकी समग्र दृष्टि ने आपसी सहिष्णुता, प्रेम और मानवता को बढ़ावा दिया है।

भारतीय ज्ञान परम्परा और रहीम

धर्म और कर्तव्य के संबंध में रहीम लिखते हैं–

रहिमन धर्म न छोड़िये, भले सिर जाये।
हरि सम कबहुँ न छड़िए, जो जग डारो पाये।।

अर्थात् श्रेष्ठ धर्म का पालन करना चाहिए चाहे सर्वस्व नष्ट हो जाये। यह विचार गीता के स्वधर्मे निधनं श्रेय:' की भावना के अनुरूप है। रहीम अपने दोहों में धर्म और कर्तव्य का महत्व बताते है, जो भारतीय परम्परा की आत्मा रही है।

संतोष और संयम का भाव:– रहीम के दोहें संयम, विवेक और संतोष की शिक्षा देते हैं। भारतीय उपनिषदों एवं संत परम्परा में संतोष को परम सदगुण माना गया है। महाभारत में भी कहा गया है कि ' संतोषाभयम् परमं' (संतोष सबसे बड़ा सुख है)

उदाहरण:–

'रहिमन साधु सो चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार–सार को गहि रहे, थोथा देई उड़ाय।।'

रहीम का यह दृष्टिकोण उसी परंपरा को प्रतिबिंबित करता है क्योंकि आंतरिक शांति और संतोष ही मोक्ष का मार्ग है।

मानवता और सहिष्णुता:– रहीम का यह दोहा ' रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि...' सभी को सम्मान देने की सीख देता है। इसी विचार से प्रेरित भारत का वसुधैव कुटुम्बकम् सिद्धांत कहता है कि सभी मनुष्यों में बधुत्व हो और हमें प्रेम करूणा से व्यवहार करना चाहिए। रहीम ने अपने रचनाओं में बड़े व्यक्तियों का आदर और छोटो के प्रति करूणा का संदेश दिया है।

प्रेम और भक्ति का भाव:– रहीम कहते हैं, –

'रहिमन प्रेम पियाला है, सिर धारी जो पीया।
धीरे–धीरे पीजिए, बहुत उताव न कीजै।।

यह भक्ति परंपरा का प्रतीक है कि प्रेम का प्याला आत्मा को मदहोश कर देता है। वास्तव में रहीम के भक्तिभाव और प्रेम गीतों में वैष्णव परंपरा की छाप साफ दिखती है। उन्होंने कृष्ण, राम, विष्णु आदि का गुणगान किया, जैसा भक्ति रस के कवियों ने किया।

उदाहरण:–

'रहिमन राजाराम को, मत भूलियों मन मांहि।
जिनके कारण वाबने, सकल भए सुर सानिह।।'

'रहिमन मुरली सी बनो, रस की धार बहाय।
जो जस राखे वादुरी, तैसे ही रह जाय।।'

प्रेम या भक्ति की गहरी भावनायें मन की बात होती है। इन्हें सबके सामने जाहिर करने से लोग मजाक बनाते है।

'रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।
सुन इठलैंहे लोग सब, बांट न लैंहे कोय।।'

प्रेम के संबंध में रहीम का यह दोहा मानव जीवन की सार्थकता को अभिव्यक्ति देता हुआ संबंधों में प्रेम की अनिवार्यता पर बल देता है–

'रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।

टूटें फिर न जुड़े, जुड़े गांठ पर जाये।।'

इसलिए रहीम का प्रेम–गीतकार व्यक्तित्व भारतीय भक्ति दर्शन दोनों से गहराई से जुड़ा है।

निष्कर्ष– रहीम की काव्यधारा भारतीय ज्ञान परंपरा का जीवंत प्रतिनिधित्व करती है। रहीम भारतीय ज्ञान परंपरा के ऐसे स्तम्भ है जिन्होने समरसता का पाठ पढाया। भले ही वे मुस्लिम पृष्ठभूमि से थे, फिर भी हिंदु कहानी, लोक संस्कृति और आध्यात्मिक मूल्यों को अपने दोहों में समान रूप से स्थान दिया। प्राचीन वैदिक और भक्ति परंपराओं से ओत–प्रोत उनके दोहे आज भी शिक्षा देते हैं। जैसे भारतीय दर्शन, धर्म, आज की भौतिक सामाजिक चुनौतियों में मार्गदर्शन करते हैं। रहीम की शिक्षा है कि भारतीय परंपराएं किसी सीमा से बंधी नहीं है, बल्कि उसमें विभिन्न विश्वासों को मिलाने की शक्ति है। इसलिए इनकी रचनाएं धर्म, करूणा, प्रेम और संयम का संदेश देती हैं, जो पारम्परिक ज्ञान की सार्वभौमिक भावना को दर्शाती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. www.ijsalt.org
2. www.theprint.in
3. www.udhnacollege.ac.in
4. en.wikipedia.org

****